मल्टीमीडिया प्रशिक्षण किट

केस स्टडीज़ और ग्रुप डिस्कशन :एकत्र होने और समूह बनाने की स्वायत्तता

डेविड सौतेर द्वारा विकसित किया गया

ग्रुप डिस्कशन में वार्तालाप करने के लिए प्रश्न

वे प्रश्न जो कि प्रतिभागियों को हैंडऑउट और प्रेसेंटेशन्स द्वारा दिए गए हैं,इन प्रश्नों के द्वारा प्रतिभागियों को अपने अनुभव बांटने का मौका मिलेगा तथा उन मुद्दों को विस्तार से विचार विमर्श करने का एक अवसर भी:

1 . इंटरनेट के आने के बाद मेरे देश/देशों में समूह बनाने के अवसरों में किस प्रकार का गुणात्मक सुधार किया है ? इन नवीन अवसरों का व्यक्तियों /संस्थाओं ने किस प्रकार फायदा उठाया है?

2. किसी व्यक्ति या संस्थान के लिए इंटरनेट के आविर्भाव ने किस प्रकार धरना प्रदर्शन और विरोध करने की संभावनाओं को मुखरित किया है ?

3 . किसी मुद्दे पर ऑनलाइन एकत्रित होने का क्या मतलब होता है? ऑफलाइन एकत्रित होने की प्रक्रिया ऑनलाइन एकत्रित होने की प्रक्रिया से किस तरह से अलग है?

4. क्या इंटरनेट समूह बनाने और एकत्रित होने की स्वतंत्रता को किसी तरह से प्रभावित करता है ? अन्य अधिकारों के किसी भी तरह के अतिक्रमण को भी क्या इंटरनेट द्वारा सम्भाव्य प्रभावित होने वाले कारकों में शामिल किया जाना चाहिए जैसे कि धार्मिक अल्पसंख्यक वर्ग?

5. अज्ञात और छद्म रूप से अज्ञात रहने में क्या- क्या नफा नुक्सान है?

केस स्टडी और ग्रुप डिस्कशन के उदहारण :

उदहारण संख्या 1

आइडल नो मोर :

आइडल नो मोर कनाडा के आदिवासी लोगों का एक विरोध आंदोलन है और इस विरोध में शामिल हैं फर्स्ट नेशन, इंनुइत और मेटिस जनजाति समूह - जिनका उदय हुआ 2012 में और 2013 के प्रारम्भ तक धरना प्रदर्शनों धरना प्रदर्शनों और अन्य संबद्ध गतिविधियों के कारण यह एक महत्त्वपूर्ण आंदोलन का रूप ले चूका था। यह आंदोलन कनाडा सरकार की कनाडा के जनजातियों के लिए बनाई गयी जनजाति नीतियों और इस जनजाति के प्रतिनिधियों के अपनी जनजाति के हितों की रक्षा न कर पाने के कारण दोनों का ही मुखरित रूप से विरोध करता है. विरोध की गतिविधियों में शामिल है राष्ट्रीय राजमार्ग का चक्का जाम, फ़्लैश मॉब और अन्य सावर्जनिक कार्यक्रमों द्वारा।

इस समूह के विकास और कार्यक्रमों को प्रभावी ढंग से क्रियान्वित करने में सोशल नेटवर्क ने अहम भूमिका निभाई है , गौर तलब है कि ये अपने आप को एक आंदोलन के रूप में देखता है न कि पारम्परिक राजनैतिक संगठन के रूप में. उन्होंने राजनैतिक गतिविधियों की सम्भाव्यताएं बढ़ाई हैं, प्रभावित लोगों के लिए उनके हित की सूचनाओं को सुलभता से उपलब्ध करवाया है, और उनकी गतिविधियों को एक दिशा प्रदान करने में अहम भूमिका निभाई है.

एरिका ली, जो कि यूनिवर्सिटी ऑफ़ सस्कत्चेवन की छात्रा हैं, मैनेज आइडल नो मोर के फेसबुक पेज की देखरेख करती हैं. टोरंटो स्टार को दिए गए एक साक्षात्कार में सोशल मीडिया की भूमिका को रेखांकित करते हुए उन्होंने बताया:

पारम्परिक रूप से मीडिया से बात करने का अधिकार मुखिया या सत्ता में शामिल लोगों में ही निहित रहता है,पर सोशल मीडिया के आरिभाव से हम जैसे साधारण लोग-विश्वविद्यालय छात्र जो कि इन मुद्दों से जुड़े हुए हैं - से भी साक्षात्कार लिया जा रहा है. सोशल मीडिया के आविर्भाव के बाद वो लोग जो कि इस तरह के आन्दोलनों में शामिल होते हैं और वे लोग जो इनसे प्रभावित होते हैं - अपने अनुभव मुखरित कर सकते हैं.

आंदोलन के फेसबुक पेज के माध्यम से, एरिका ने बताया :

"लोगों को, विशेषतः उन लोगों को जो कि उत्तरी समुदाय और फर्स्ट नेशन समुदाय का प्रतिनिधित्व करते हैं, मौका देती है ऐसे आयोजनों से जुड़ने का और उनसे प्रेरणा प्राप्त करने का, क्योंकि फेसबुक के आविर्भाव से पहले इस प्रकार के आयोजन अख़बारों और टेलीविज़न की खबरों में शायद ही शामिल होते थे "

ट्वीटर भी एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है. हैशटैग #idlenomore का ट्वीटर पे पहली बार जिक्र 1 दिसंबर 2012 को किया गया था, और 3 हफ्ते में 40000 बार इस हैशटैग का जिक्र हुआ।

आइडल नो मोर के ऊपर टिप्पणी करने वालों का ये कहना है कि सोशल मीडिया के दो दूरगामी प्रभाव पड़े हैं : स्थानीय व्यथाएँ राष्ट्रीय आंदोलनों का रूप अख्तियार कर रही हैं तथा इसने सम्भाव्य राष्ट्रीय नेताओं की एक फेरहिस्त लिस्ट पैदा कर दी है. इन टिप्पणीकारों का यह कहना है कि इन समुदायों के बीच इंटरनेट अभी भी उतना सहज तथा सुलभ नहीं है, और इस बात का अंदेशा है कि सोशल मीडिया के आविर्भाव के कारण राजनैतिक गतिविधि की धूरी बदल सकती है, और इस आंदोलन की कमान गरीब ग्रामीणवासियों के हाथ से निकल कर शहरी पढ़े लिखे कार्यकर्ताओं के हाथ में जा सकती है.

इस तरह के उदाहरणों के बारे में सूचना निम्न सन्दर्भों से प्राप्त की जा सकती है:

1.www.thestar.com/news/Canada/politics/article/1313874/-social-media-helps-drive-idle-no-more-movement

2. en.wikipedia.org/idle_no_more

3. idlenomore.ca

4. www.facebook.com/IdleNoMoreCommunity

विचार विमर्श के लिए प्रश्न

1 आपके देश/देशों में राजनैतिक विचारधारा को दिशा प्रदान करने में सोशल मीडिया किस तरह की भूमिका निभाता है? अपने समुदायों का प्रतिनिधित्व सोशल मीडिया के माध्यम से सही तरह से हो पाता है या नहीं?

2 . क्या सोशल मीडिया के आविर्भाव से राजनैतिक गतिविधि के स्वरुप और उसमें भागीदारी में कोई परिवर्तन आ रहा है? क्या इसके कारण विरोध को और प्रभावशाली बनाने में सफलता मिल रही है

3. वे संस्थाएं किस तरह से प्रभावशाली ढंग से सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते हुए कार्यक्रमों को कुशलता से चला सकती हैं, और किस प्रकार अपने प्रभाव का दायरा बढ़ा सकती हैं?

केस स्टडी और ग्रुप डिस्कशन के उदहारण :

उदहारण संख्या 2:

सऊदी अरेबिया में महिलाओं संगठित करना

सऊदी अरेबिया में महिलाओं के अधिकारों की व्यापक पैमाने पर कटौती की गयी है . महिलाओं को काम करने के लिए या यात्रा करने के लिए पुरुष अभिवावकों की

रजामंदी लेनी पड़ती है और बहुत सारी ऐसी भी जगहें हैं जहाँ पर वे काम करने भी नहीं जा सकतीं। पाबंदियों का दायरा इतना बड़ा है कि महिलाओं के संस्थाएं और संगठन महिलाओं से सम्बंधित मुद्दों पर केंद्रित हो कर काम नहीं कर पाते. सऊदी अरेबिया विश्व का एकमात्र ऐसा देश है जहाँ महिलाओं के गाड़ी चलाने पर प्रतिबन्ध है, और महिलाओं के सामाजिक उद्धार की दिशा में इसे प्रथम सफल प्रयास के रूप में देखा जा रहा है. महिलाओं के अधिकारों पर काम करने वाले कार्यकर्ताओं ने इंटरनेट के माध्यम से इस प्रतिबन्ध के खिलाफ मांग उठाई है और इस प्रतिबन्ध को हटाने की वकालत की है।

विचार विमर्श के लिए प्रश्न

1 . उन देशों में जहाँ पर समूह बनाने और जन आंदोलन करने के नागरिक के आम अधिकारों को एक तरह से दबा के रखा गया है, ऐसी परिस्थितियों में इंटरनेट किस तरह सुलभ करवा सकता है? अन्य देशों में इस तरह के आंदोलन चलाने वाले समूह इस अनुभव से क्या शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं?

2 . ऊपर दर्शाए गए उदहारण में ऑनलाइन और ऑफलाइन समूह और प्रतिरोध के बीच में क्या सम्बन्ध है और अन्य देशों में यह सम्बन्ध किस तरह उभर कर सामने आता है? क्या इन अनुभवों और अन्य अनुभवों में बहुत बड़ा अंतर है ?

3. राष्ट्रीय प्रतिरोध के लिए इंटरनेट का प्रयोग करते हुए किस प्रकार अंतर्राष्ट्रीय सहायता ली जा सकती है?